International Journal of Applied Research 2019; 5(5): 91-92

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(5): 91-92
www.allresearchjournal.com
Received: 14-03-2019
Accepted: 18-04-2019

डॉ. प्रियंका कुमारी
शोधार्थी, इतिहास विभाग, ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Correspondence
डॉ. प्रियंका कुमारी
शोधार्थी, इतिहास विभाग, ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

राष्ट्रीय आन्दोलन में सरदार भगत सिंह का योगदान

डॉ. प्रियंका कुमारी

प्रस्तावना

भारत में ब्रिटिश साम्प्रज्यवाद की स्थापना के बाद, इस देश को ब्रिटिश साम्राज्यवाद के पंजे से स्वतंत्र कराने के लिये स्वतंत्रता आन्दोलन अथवा राष्ट्रीय आन्दोलन चले। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन कई चरणों से गुजरता हुआ अपने लक्ष्य की ओर अग्रसित हुआ। सविनय अवज्ञा आन्दोलन के पश्चात् ऐसी अनेक घटनायें हुई, कुछ ऐसे तत्व सक्रिय हुये, जिसके परिणामस्वरूप भारत को लगभग 200 वर्षों तक अंग्रेजों की गुलामी की बेड़ी में जकड़े रहने पश्चात् स्वतंत्रता की बयान भयस्सर हुई।

ब्रिटिश साम्राज्य में भारतीय राज्यों का विलय होने के पश्चात् भारतीयों में अंग्रेज विरोधी भावनाएं जागृत होने लगी। प्लासी विद्रोह के साथ अंग्रेजों के विरूद्ध अनेक विद्रोह, आन्दोलन एवं बगावतें हुई और ब्रिटिश शासन का खुले आम विरोध किया गया। जिसमें किसानों, शासकों, सैनिकों जमींदारों, धार्मिक भिक्षुओं तथा अपदस्य भारतीय शासन के मंत्रियों एवं आश्रितों ने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह तथा आन्दोलन किये।

ब्रिटिश शासन अन्याय और शोषण पर आधारित था। अंग्रेजी शासन के आरम्भिक 100 वर्षों में राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक सामाजिक और सैनिक क्षेत्र में अनेक ऐसी प्रवृत्तियों का उदय हुआ जिन्होने भारतीय जनता को अंग्रेजी

शासन का प्रबल विरोधी बना दिया। जिसके परिणामस्वरूप एक व्यापक विद्रोह हुआ, जिसे 1857 का भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम कहा जाता है। यद्यपि इस संघर्ष में अंग्रेज सफल हुये और उन्होने भारत में ब्रिटिश सत्ता की स्थापना की। क्रान्ति की असफलता के बाद अंग्रेजों ने क्रान्ति में भाग लेने वाले भारतीयों पर अमानुषिक अत्याचार किये।

असफल क्रान्ति ने राष्ट्रीयता की भावनाओं को प्रोत्साहित किया। भारतीय धर्म और संस्कृति का पुर्नजागरण हुआ तथा अंग्रेजों के प्रति भारतीय भावनायें दिन प्रतिदिन उग्र होती चली गयी। इन भावनाओं ने 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना में महत्वपूर्ण योग दिया। 1885 में स्थापित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अखिल भारतीय स्वरूप का संगठन था। इसका उद्देश्य जाति, धर्म या वर्ण के किसी भेदभाव के बिना सभी भारतवासियों का प्रतिनिधित्व करना था।

भारतीय स्वतंत्रता के लक्ष्य की प्राप्ति के लिये कांग्रेस के द्वारा जिन विभिन्न रूपों में कार्य किया गया, उसके आधार उदारवादी, उग्रवादी तथा गांधी युग के रूप में हमारे सामने आये। इनके माध्यम से भारत में अनेक आन्दोलन हुये। भारत और ब्रिटेन की बीच हितों का विरोध इन आन्दोलन का मूल आधार था। गांधी युग में तो राष्ट्रीयता जन–जन की वस्तु बन चुकी थी। बच्चे–बच्चे के मुख से स्वतंत्रता की मांग सुनने को मिलती थी।

बीसवीं सदी के प्रारम्भ में भारत में अपूर्व राष्ट्रीय जागृति की लहर आयी, और वह दो धाराओं में बंट गयी। एक उग्रवादी राष्ट्रवाद की धारा प्रभावित हुई जो 'निष्क्रिय प्रतिरोध के सिद्धान्त पर ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध संघर्ष करना चाहते थे। इसके अतिरिक्त नवयुवकों का एक ऐसा वर्ग था जिन्हें उग्रवादियों के शान्ति पूर्ण संघर्ष में विश्वास नहीं था। वे हिंसा तथा आतंक द्वारा भयभीत करके विदेशी शासन का समूल नष्ट करना चाहते थे। इस प्रकार उदारवादी, उग्रवादी तथा क्रान्तिकारी सभी का लक्ष्य एक ही था, भारत की आजादी, साधन भले ही भिन्न थे और यह आन्दोलन नागरिक स्वतंत्रता के पक्षधर थे।

नवयुवकों के इस वर्ग को क्रान्तिकारी आन्दोलन का रूप दिया गया। भारतीय क्रान्तिकारियों के कार्यों की पृष्ठभूमि में एक निश्चित् दर्शन था और उनका एक सामान्य लक्ष्य था। इन क्रान्तिकारियों के द्वारा सरकारी खजाने लूटने, सशस्त्र डकैती, हत्या और बमबाजी के जो भी कार्य किये जाते थे वे सभी भारत के लिये स्वतंत्रता प्राप्त कने की निश्चित और व्यापक योजना के अंग थे ! इन क्रान्तिकारियों के उद्देश्य भारत में ब्रिटिश शासन को समाप्त कर स्वतंत्रता प्राप्त करना और निम्न वर्ग के प्रति अन्याय पर आधारित व्यवस्था का अन्त करके एक न्यायपूर्ण व्यवस्था की स्थापना करना था। भारत में क्रान्तिकारी संगठित होना शुरू हो गये थे। धीरे–धीरे क्रान्तिकारी आतंकवाद की दो धाराएं

विकसित हुई– एक पंजाब, उत्तर प्रदेश और बिहार तथा दूसरी बंगाल में। ये दोनों धाराएं सामाजिक बदलाव से उपजी नई सामाजिक शक्तियों से प्रभावित हुई। इसमें थे, क्रान्तिकारी रामप्रसाद श्विस्मिलश् योगेश चटर्जी और शचीन्द्र नाथ सान्याल आदि। उत्तर प्रदेश के क्रान्तिकारियों के लिये 'काकोरी काण्डश् एक बड़ा आघात जरूर था, पर ऐसा नहीं जो क्रान्तिकारी आन्दोलन के लिये मौत साबित हो। बल्कि इस घटना के पश्चात् क्रान्तिकारी संघर्ष के लिये और भी युवा तैयार हो गये। विजय कुमार सिन्हा, शिव वर्मा, जयदेव कपूर एवं भगत सिंह भगवतीचरण बोहरा, सुखदेव ने चन्द्रशेखर आजाद के नेतृत्व में एच.आर.ए. को फिर से कार्य शुरू करने दिया एवं ये युवा समाजवादी विचारधारा के प्रभाव में आते चले गये।

काकोरी के बाद के युग में चन्द्रशेखर आजाद के बाद उत्तर भारत के सबसे बड़े नेता तथा प्रमुख व्यक्ति सरदार भगत सिंह थे। सरदार भगत सिंह का जन्म जिस वंश में हुआ था, उसके लिये देश भक्ति या देश के लिये त्याग करना कोई नई बात नहीं थी। भगत सिंह के बाबा सरदार अर्जुन सिंह आर्य समाजी थे। तथा देशभक्ति की भावना उनमें कूट–कूट के भरी हुयी थी।

सरदार अर्जुन सिंह ने समाज सेवा और देशसेवा का जो मार्ग प्रशस्त किया था, उसमें उनके तीनों बेटे चल पड़े थे। भगत सिंह के पिता सरदार किशन सिंह एवं उनके छोटे भाई सरदार अजीत सिंह तथा सरदार स्वर्णसिंह अपने सच्चे देश प्रेम के लिये पंजाब में प्रसिद्ध हैं। कैद, निर्वासन तथा दरिद्रता के द्वारा इनकी देश भक्ति की कड़ी परीक्षा हो चुकी है।

जिस दिन सरदार किशन सिंह और सरदार स्वर्ण सिंह जेल से छूटे एवं सरदार अजीत सिंह के छूटने का समाचार मिला, उसी दिन भगत सिंह का जन्म हुआ। इसीलिये उनकी दादी ने उनको भाग्यों वाला कहा, जिससे उनका नाम भगत सिंह पड़ा। बचपन में ही उन्होने घर में रखी हुयी सरदार अजीत सिंह की पुस्तकों एवं पुराने समाचार पत्रों का अध्ययन किया। इस प्रकार उनके क्रान्तिकारी विचारधारा का शिलान्यास बचपन में ही हो गया। उस समय जलियांवाला बाग का हत्याकांड, असहयोग आन्दोलन और उसका स्थगन आदि ऐसी घटनायें हुयी जिसका प्रभाव भगत सिंह पर पड़ा और वे आंदोलन के उद्देश्य क्या है इस पर विचार करने लगे। इससे उनके विचारों में परिवर्तन आया और इन विचारों का विकास नेशनल–कालेज में अध्ययन के दौरान तीव्र गति से हुआ। अनेक क्रान्तिकारी पुस्तकों का अध्ययन उन्होने किया। एवं देश के लिये बलिदान देने की दिशा में उन्मुख हुये।

अपनी देशभक्ति की भावना का परिचय उन्होने गृह त्याग करके दिया एवं देश के लिये बलिदान देने की भावना से ओत–प्रोत होकर वह क्रान्तिकारी संगठन में शामिल हो गये। एक सम्पादक के रूप में उन्होने क्रान्तिकारी लेख लिखे। भगत सिंह क्रान्तिकारी दल के सदस्य के रूप में शामिल होकर उसके कार्यों में जुट गये। अतः भगत सिंह क्रान्तिकारी पार्टी के सक्रिय सदस्य बनकर, देश की स्वतंत्रता व क्रान्ति के वेदी पर अपना सर्वस्व बलिदान करने की प्रतिज्ञा कर बैठे।

कुछ समय तक उग्र और गुप्त साहित्य के माध्यम से नवयुवकों में क्रान्तिकारी विचारों का प्रचार होता रहा। किन्तु भगत सिंह महसूस कर रहे थे कि वह खुले रूप में जनता के सामने आकर जनता को अपने विचारों से अवगत करायें। और अपने इसी उद्देश्य को क्रान्तिकारी पार्टी के सामने रखकर 1926 में नौजवान भारत सभा की स्थापना की। यह नौजवानों का खुला मंच था जिसके माध्यम से जलसे व भाषण हुआ करते थे।

क्रान्तिकारियों ने बम बनाना सीखा, इसीलिए जनता इन्हें श्बम् पार्टी कहती थी। 1926 में लाहौर से दशहरा बम काण्ड की घटना घटित हुयी। जिसमें पुलिस ने भगत सिंह को पकड़ा। पहली बार भगत सिंह की गिरफ्तारी इसी काण्ड में हुयी। पुलिस ने उन पर अनेकों अत्याचार किये किन्तु उन्होने अपने क्रान्तिकारी व्यक्तित्व का अदभुत परिचय दिया।

शहीद होने से पहले भगत सिंह ने कहा था कि ब्रिटिश हुकूमत के लिये मरा हुआ भगत सिंह जीवित भगत सिंह से ज्यादा खतरनाक होगा। मुझे फांसी हो जाने के बाद मेरे क्रान्तिकारी विचारों की सुगन्ध हमारे इस मनोहर देश के वातावरण में व्याप्त हो जायेगी। वह नौजवानों को मदहोश करेगी और वे आजादी और क्रान्ति के लिये पागल हो उठेगें। नौजवानों का यह पागलपन ही ब्रिटिश साम्राज्यवादियों को विनाश की कगार पर पहुंचा देगा। यह मेरा दृढ विश्वास है।

मैं बेसब्री के साथ उस दिन का इन्तजार कर रहा हूं। जब मुझे देश के लिये मेरी सेवाओं और जनता के लिये मेरे प्रेम का सर्वोच्च पुरस्कार मिलेगा।

भगत सिंह की भविष्यवाणी सत्य साबित हुई! उनका नाम मौत को चुनौती देने वाले साहस, बलिदान, देशभक्ति और संकल्पशीलता का प्रतीक बन गया। समाजवादी समाज की स्थापना का उनका सपना शिक्षित युवकों का सपना बन गया और श्इंकलाब जिन्दाबादश् का उनका नारा समूचे राष्ट्र का युद्धनाद हो गया। कारागार कोड़े और लाठियों के प्रहार उनके मनोबल नहीं तोड़ सके।

1945–46 के दौर में जब विश्व ने एक सर्वथा नये भारत को करवटें बदलते देखा। मजदूर, किसान, नवयुवक, नौसेना, थलसेना, वायुसेना और पुलिस तक सब कड़ा प्रहार करने के लिये आतुर थे! बलिदान और यातनाओं को सहन करने की जो भावना 1930–31 में थोड़े से नौजवानों में थी, अब समूचे राष्ट्र की जनता में दिखाई देने लगी।

1947 में देश आजाद हो गया किन्तु आज वर्षों बाद भी भगत सिंह के बलिदान को भुलाया नहीं जा सकता। भगत सिंह क्रान्तिकारी से क्रान्ति के प्रतीक बन गये।

संदर्भः

1. क्रान्तिवीर भगत सिंह : 'अभ्युदय' और 'भविष्य', संपादक– चमनलाल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण–2012
2. भारत में सशस्त्र क्रांति–चेष्टा का रोमांचकारी इतिहास, मन्मथनाथ गुप्त, नागरी प्रेस, प्रयाग, संस्करण–1939
3. अमर शहीद भगत सिंह, वीरेन्द्र सिंधु, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नयी दिल्ली, संस्करण–1974
4. शहीद सरदार भगत सिंह, रामदुलारे त्रिवेदी, त्रिवेदी एंड कंपनी, कानपुर, प्रथम संस्करण–1938 ई०
5. स्वाधीनता संग्राम के क्रान्तिकारी साहित्य का इतिहास (भाग–दो)